22-8-68 सतगुरुवार ओम शान्तिः प्रातः क्लास

बेहद का रुहानी बाप बेहद के रुहानी बच्चो को बैठ समझाते है। अब यह तो बेहद का बाप और बेहद के बच्चे ही जाने। और कोई नां ही बेहद के बाप को जानते है नां ही बेहद के बच्चे अपने को मानते है। ब्रहमा मुख वंशावली ही जानते है और मानते है। और कोई तो मान भी नही सके। ब्रहमा भी हरुर चाहिये। जिसको आदी देव कहते है। जिसमे बाप की प्रवेशता होती है। बाप आकर क्या करते है, कहते है पावन बनना है। बाप की श्रीमत पर है कि आपेन को आत्म निश्चय करो। बच्चो को आत्मा का परिचय भी दिया है। बच्चे जानते है हम आत्मा कितनी छोटी बिन्दी है। यह तो यू भी जानते है। आत्मा भृकुटी के बीच मे निवास करती है। बाप ने समझाया है कि आत्म अविनाशी है। इनका तख्त यह विनाशी शरीर है। अब यह बाते तुम बच्चे जान गये हो। दुनियां नही जानती है कि हम सभी आत्मायें आपस मे भाई-2 है। किसीको तुम प्रदर्शनी मे वां यहां भी समझाते हो तो मानते है कि यह ठीक है कि हम भाई-2 है एक बाप के ही बच्चे है। ईश्वर सर्व व्यापी कहना यह भूल है। तुम अच्छी रीती समझाते हो। हर एक मे पांच विकारो की प्रवेशता है। तो कई समझते भी है कि यह ठीक कहते है। हम भाई-2 है। जरुर बाप से वर्सा मिलना चाहिये। परन्तु यहां से बाहर निकलते है तो फिर माया के तूफानो मे चले जाते है। कोई बिरले ही ठहरते है। सब जगह यही हाल होता है। कोई थोडा अच्छा समझते है तो जास्ती समझने की कोशिश करते है। अभी तुम सबको समझा तो सकते हो। यह जास्ती ध्यान देते है, जरुर बडा भक्त होगा, कम ध्यान देते है तो कम भक्त है। इन बातो को तो समझने वाले ही समझे। कोई तो नां समझते है तो फिर समझा भी नही सकते है। तुम्हारे पास भी नम्बरवार है। कोई अच्छा आदमी आता है तो उनको समझाने लिये भी ऐसे ही अच्छे को भेजा जाता है। शायद कुछ भी समझ जावे। यह तो जानते है कि बडे आदमी इतनी जल्दी नही समझेंगे। हां ओपिनयन देते है किइनकी समझानी बहुत अच्छी है। बाप का परिचय पुरा देते है। परन्तु खुद को फुरना नही है। तुम कहते हो बेहद के बाप को याद करो। तो विकर्म विनाश हो। अभी तुम समझते हो बाप डायरेक्ट हम आत्माओं से बात करते है। डायरेक्ट सुनने से तीर अच्छा लगता है। जो ब्रहमा कुमारियो द्वारा सुनते है। यहां तो डायरेक्ट परमपिता परमात्मा ब्रहमा द्वारा समझाते है। है बच्चो:- तुम बाप का कहना नही मानते हो? तुम बच्चे तो ऐसे नही कह सकोगे नां। वहां तो बाप नही है। यहां बाप खुद बैठा है। बाप बात करते है कि बच्चे तुम बाप की भी नही मानेंगे। अज्ञान काल मे भी बाप की समझानी और भाई की समझानी मे फर्क पड़ता है। भाई का इतना असर नही होगा जितना ही कि बाप का होगा। बाप फिर भी बडा हुआ नां। तो डर रहेगा। तुमको भी बाप ही बैठ समझाते है कि मुझ अपने को बाप को याद करो। तुमको शर्म नही आती है? तुम मुझे बार-2 भूल जाते हो? बाप सीधा-2 कहते है तो वो असर जल्दी करता है। और बाप कहते है यह एक जन्म पवित्र रहो। तुमको लज्जा नही आती है? बेहद के बाप का कहना नही मानते हो। हद के बाप का कहना झट मानते हो। बेहद का बाप कहते है यह जन्म निर्विकारी बनो, तो 21 जन्म निर्विकारी बन कर पवित्र दुनियां का मालिक बनोगे। यह नही मानते हो? बाप के कहने का तीर कडा लगता है। फर्क तो रहता है नां। ऐसे भी नही है कि नये-2 से बाबा मिलते रहेंगे। उल्टे सुल्टे प्रश्न बैठ करते है। बुधी में नही बैठता है क्योंकि यह तो है नई बात। गीता मे कृष्ण का नाम लिख दिया है सो तो हो नही सकता। अभी ड्रामा अनुसार तुम्हारी बुधी मे बैठा है। तुम बच्चे भागते हो हम बाबा के पास जावे। डायरेक्ट मुरली सुने। वहां तो भाईयों द्वारा सुनते थे। अब बाबा से सुने। बाप का असर फट होता है। बच्चे -2 कह बात करते है। लज्जा नही आती है? बाप को याद नही करते हो? बाप के साथ तुम्हारा प्यार नही है। कितना याद करते हो? कम से कम एक घण्टा, और:- निरन्तर याद करोगे तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। जन्मजन्मान्तर के पापो का बोझा सिर पर है। बाप ही समझाते है कि तुमने बाप की कितनी ग्लानी की है। तुम्हारे पर तो केस चलना चाहिये।

अखबार आद मे कोई के लिय ग्लानी लिखते है तो उस पर केस करते है नां। अब बाप याद दिलाते है कि तुम क्या-2 करते थे जैस कि बिलकुल ही बुधी महामूर्ख थे। बाप को कितनी गालियां देते रहते हो। बदनाम करते हो यह तो बडा पाप हुआ। बाप जो विश्व का मालिक बनाते है उनको तुम गाली देते हो। बाप समझाते है कि ड्रामा अनुसार रावण के संग मे अब भक्ति मार्ग सब पुरा हुआ। फास्ट हो गया है। बीच मे कोई रोकने वाला तो होता नही। दिन प्रति दिन उतरते -2 तमोप्रधान बुधी हो जाते है। जिसकी ही पुजा करते है उनको ही ठिक्कर-भित्तर मे कह देते है। इसको ही कहा जाता है बेहद की बेसमझी। बेहद के बच्चो की बेहद की बेसमझी। एक तरफ शिव बाबा की पुजा करते है दुसरी तरफ उनको ही बाप को सर्वव्यापी कह देते है। तुम बच्चो को याद मे आता है यह तो हम जन्मजः करते ही आये है। बाप कहते है तुम तोपक्के बेवकूफ हो। अभी तुम को भी स्मृती आती है। इतनी बेवकूफी की है जो बाप सर्वव्यापी कह ग्लानी कर दी है। अब तुम बच्चो ने समझा है तो अब पुरुषार्थ कर रहे हो। बेगर टू प्रिन्स बनने। श्रीकृष्ण सतयुग का प्रिन्स उनके लिय भी फिर कहते है कि 16।08 रानियां थी। बच्चे थे। अभी तुमको तो लज्जा आवेगी। कोई पाप करते है तो भगवान के आगे ऐसे कान पकड कर कहते है कि हे भगवान बडी भूल हुई, रहम करो। क्षमा करो। तुमने तो कितनी बडी भूल की है। बाप समझाते है। ड्रामा मे ही ऐसा था। भक्ति मार्ग मे तुमको ऐसा बनना ही है। महान पतितबुधू बेसमझ बनोतब तो मै आऊं। देवताओं को भी गाली देते आये हो, बाप को भी गाली देते रहते है। अब बाप कहते है तुमको तो सभी धर्म वालो का कल्याण करना है। बाप जो सब की सदगति करते है उनके लिये सभी धर्म वाले कह देते है कि सर्वव्यापी है। यह कहां से सीखे? भारतवासियों से। शास्त्र मे लिख दिया है भगवानोवाच कि मै सर्वव्यापी हूं। तुम्हारे कारण औरो का भी ऐसा हाल हो गया है। तुम कितने पापात्मा तुच्छ बुधी हो गये हो। महापापात्मा बन गये हो। पता भी नही पड़ता है कि माया ने ऐसा बेवकूफ बना दिया है कि जो बिलकुल ही पता नही पड़ता है। जैसे चूहा काटता है तो पता भी नही पड़ता है। पुकारते है हे पतित पावन परन्तु समझते नही है। हम पहले जब घर से आये तो हम पतित थे क्या? हम आत्मा है यह भी पता नही है। देह-अभिमानी बने है तो अपने को देह ही समझते रहते है। कोई भी धर्म वाला आवे उनसे यह पूछना है परमपिता परमात्मा का तुमको परिचय है? वो कौन है। कहां निवास करते है? वो तो कहेंगे ऊपर मे निवास करते है। यां कहेंगे कि सर्वव्यापी है। बाप समझाते है तुम्हारे कारण सारी दुनियां चट खाते मे आ गई है। निमित तुम बने हो। सबको समझाना पड़ता है। भल ड्रामा अनुसार होता है। परन्तु तुम पतित तो बन ही गये हो नां। सभी पापात्मायें है। अब पुण्यात्मा बनने लिय पुकारते हो। सभी धर्म वालो को घर मुक्तिधाम मे जाना है। अभी तुम सारी दुनियां के आत्माओं को समझ गये हो। सभी ऊपर मे रहते है। वहां पवित्र है। यह भी ड्रामा बना हुआ है जो कि बाप आकर समझाते है। बाप कहते है यह ज्ञान सभी धर्म वालो के लिय है। कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है, मै भी ईश्वर हूं बोलो ऐसा पाप मत करो। बाबा के पास समाचार आया थाकि इन्दौर मे एक आचार्य रजनेश ने प्रवचन मे कहां कि आप सबको आत्मा मे परमात्मा समझ कर नमस्कार करता हूं। कुछ भी समझ नही। अब इतने सब परमात्मा है क्या? कुछ भी बुधी नही। अब बाप बच्चो को ही समझाते है। रमः आः भी सोने ही है। तुम ही सतोप्रधान से उतरते-2 अब तमोप्रधान बने हो। जिन्होने भक्ति जास्ती नही की है वो ठहरते भी नही है। सेन्टर पर भी कोई कितना समय कोई कितना ठहरते है। इसीसे ही समझना चाहिये भक्ति कम की है। इसलिय ही ठहरते नही है। अब जावेंगे कहां? दूसरे कोई दुकान तो है ही नही। ऐसी क्या युक्ति रचे जो कि मनुष्य जल्दी ही समझ जावे। अभी तो सब तरफ पैगाम देना है। यही कहना है कि बाप को याद करो। तुम खुद ही पुरा याद नही कर सकती हो तो तुम्हारा तीर भी कैसे लगेगा इसलिय ही बाबा कहते है चार्ट रखो। मुख्य बात है ही पावन बनने की। जितना पावन बनेंगे

इतनी नालेज धारन होगी खुशी भी होगी। बच्चो को तो बहुत खुशी होनी चाहिये। हम सबका उधार करेंगे बाप भी आकर सबकी सदगति कर रहे है नां। बाप को तो खुशी और गम की दरकार ही नही है। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। तुमको भी नां खुशी नां गम होना चाहिये। बाप मिला बाकी फिर क्या। सिर्फ बाप की मत पर चलना है। बाप मिला फिर बाकी क्या। सिर्फ बाप की मत पर चलना है। यह समझानी भी अभी मिलती है। सतयुग मे नही होगी। वहां तो ज्ञान की बात ही नही। यहां तुमको बेहद का बाप मिला है तो स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिये। बाप तो कहते है कि विलायत मे भी तुमको जाकर समझाना चाहिये। सब धर्म वालो पर तुमको तरस पड़ता है। सब कहते है कि हे भगवान हम पर रहम करो। बिलस करो। दुःख से लिबरेट करो। परन्तु समझतग कुछ नही है। बाप अनेक प्रकार की युक्तियां बताते है। सबको यह बताना है कि तुम रावण की जेल मे पडे हुये है। कहते है स्वतन्त्रा मिले। परन्तु वास्तव मे आजादी किसको कहा जाता है यह कोई नही जानते है। रावण की जेल मे तो सभी फंसे हुये है। अब स्वतन्त्रा देने लिये बाप आये है। फिर भी रावण की जेल मे प्रतन्त्र होकर पाप करते रहते है। सच्ची-2 आजादी कौनसी है वो लोगो को बताना चाहिये। तुम अखबारो मे भी डाल सकते हो। यहां रावण के राज्य मे आजादी है थोडे ही। बहुत शीट मे लिखना चाहिये। बोलो तुमको स्वतन्त्रा है कहां। अब तो रावण की जेल मे है। तुम्हारा विलायत मे भी आवाज जावेगा तो फिर यहां पर भी झट समझ जावेगे। एक दो पर गुरगुर करते रहते है। तो यही आजादी हुई क्या? आजादी तो तुम को बाप दे रहे है। रावण की जेल से आजाद करते है। तुम जानते हो कि वहां तो हम बहुत आजाद बहुत धनवान होते है। किसीकी भी नजर नही पड़ती थी। पीछे जब कमजोर बने तो सभी की नजर तुम्हारे पर पड़ती है। तुम्हारे धन पर। मुहम्मद गजनवी ने आकर मन्दिर को लूटा तो तुम्हारी आजादी पुरी हो गई। रावण के राज्य मे प्रतन्त्र बन गये हो। अभी तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम सुगम युग पर है। सच्ची-2 आजादी को पा रहे है। वो तो आजादी को समझते ही नही है। तो यह बात भी युक्ति से समझानी है। तो यह बात भी युक्ति से समझानी है। जिन्होने कल्प पहले स्वतन्त्रा पाई है वो ही जानेंगे। तुम मूक समझाते हो तो कितनी बहस करते है। जैसे कि जंगली बुधी सरप नष्ट करते है। तो दिक्कत नही होती है। बात करने की। बाप आकर स्वतन्त्रा देते है। रावण की परतन्त्रा मे बहुत दुःख है। अपारअपार दुःख है। बाप के राजय मे हम कितने आजाद होते है। आजादी उसको कहा जाता है जबकि हम पवित्र देवता बनते है। तो रावण के राज्य से छूट जाते है। इस बात को भी कोई समझते नही है। सच्ची-2 आजादी तो बाप ही आकर देते है। अभी तो पुराने राज्य मे सभी गुलामी मे है। सभी दुःखी है। स्वतन्त्रा मिलने का यह पुरुषोत्तम संगम युग है। मनुष्य इन बातो को नही जानते है। वो तो समझते है कि फेरन गवर्मेन्ट गई तो हम आजाद बने। अब तुम समझते हो कि जब तक पावन नही बने है तब तक उन्होको आजाद नही कहेंगे। फिर जमघटो की सजाय खानी पडेगी। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। बाप आये है घर ले जाने। वहां पर तो सभी आजाद होते है। तुम तो सभी धर्म वालो को समझा सकते हो। तुम आत्मा हो नां, मुक्तिधाम से आये हो पार्ट बजाने। सुखधाम से फिर दुःखधाम मे तमोप्रधान दुनियां मे आ गये हो। यह भी कोई समझते नही है कि हम इतना गुलाम बन गये है। बाप कहते है कि तुम तो मेरी सन्तान हो रावण की तो नही हो। मै तुमको राजभाग देकर गया था। तुम अपने राज्य मे कितने आजाद थे। अब फिर से वहां पर जाने लिये पावन बनना है। नालेज तो है सीस आफ इनकम। धनवान बनते हो। वहां तो पैसो की चिन्ता नही होती है। भल गरीब हो तो भी पैसे की चिन्ता नही। सुखी रहते है। बाकी राजधानी मे पद तो होते ही है नां। सूर्यवंशी राजधानी जैसे सभी थोडेई बनेगे। जितनी मेहनत उतना ही पद। तुम सब धर्म वाले की सर्विस करने वाले हो। विलायत वालो को भी समझाना है कि तुम सबभाई-2 हो नां। सब शान्तिधाम मे रहते थे अब रावण राज्य मे हो। अब फिर शान्तिधाम घर जाने का रास्ता आपको बताते है। बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। तुम मुझे लिबरेटर कहते हो नां। परन्तु यही नही समझते है कि कैसे लिब

बच्चे कहीं पर भी मूझ पडेगे तो कहेगे नां कि बाब हमे अपेन घर ले चलो। जैस तुम बच्चे फाग होने कारण जंगल मे ही मूंझ गये थे। रास्ते का पता ही नही पड़ता था। उनको कहना पडा कि हमको रास्ता बताओं। बेहद के बाप को भी कहते है कि बाबा हमको लिबेरट करो। आप चलो तो हम भी आपके पीछे चलेगे। सिवाय बाप के कोई भी रास्ता बताते नही है। जहां पर भी जाओं माथा टकराता है। कितनी रिवटरिवट है। कितने तीर्थो पर धक्के खाते रहते है। परन्तु भगवान को ही जानते है तो उनको फिर ढूढेगे भी कहां से। भगवान क्या चीज होती है वो तो यह भी नही जानते है। यात्रा करते है भगवान से मिलेन की। और भगवान कहां है? सर्वव्यापी है तो फिर मिलगा कैसे। कितना अज्ञान है। अज्ञान अन्धेरे मे कौन ले गया? विदवान पण्डित। सब का सदगति दाता एक ही बाप है। आधा कल्प तो तुम सदगति मे रहते हो। बाप ने समझाया है कि जो धर्म जिस समय स्थापन होना है वो उस समय ही होगा। जो और-2 धर्मो मे कनवर्ट हो गये हैवो भी निकल आवेगे। तुम जानते हो कि दे, दे, धर्म मे तो अथाह सुख है। मनुष्यो को समझाने मे कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कितनीमुशकल से समझते है। देवी झाड बडा जरूर होना है। कितने ही चलते-2 गिर पडते है। फिर भी आवेगे तो जरूर। एक बार भी ज्ञान सुना तो उनको फल जरूर मिलना है। परन्तु पद कम हो जावेगा। अभी तुम बच्चो को तो श्रीमत पर चलना है। अशीर्वाद की बात नही। श्रीमत मिली है तो उसपर चलना है नां। रास्ता तो बता ही दिया है। बाप को याद करते रहो। आत्मा समझती है कि हम को बाप को याद करना है। बाप ही पावन बनाने वाला है। भगवानोवाच:- है नां कि मामेकम् याद करो। गधा थोडे ही भरेगे। साधु सन्त आद सभी झूठ बोलेत है। यह अपेन को श्री-2 108 भी कहला नही सकते है। मम्मा ने सभी को पत्र लिखा था। वो तो और ही अंहकार मे आ गये। हम तो बहुत बडे विदवान आचार्य है। बाप कहते है कि यह सब शास्त्र आद पढते-2 तुम नीचे ही उतरते ओय हो। वो तो समझते है कि हम मोक्ष को पावेगे। ऐसो -2 को भी समझाना है। जरूती तीक-2 नही। मनुष्य तो अक्सर करके पत्थर बुधी है। अब बाप कहते है कि मुझे याद करो। मै ही पतित पावन हूं। सर्वशक्तिवान हूं। तुम सन्यासियों को भी बोल सकते हो कि तुम्हारा तो धर्म ही अलग है। तुम वे शंकराचार्य के। वो तो बाद मे आता है। शुरू-2 मे तो जरूर एक ही आदीसनातन देवता धर्म होगा। बाकी सभी धर्म तो मुक्ति गेये। ऐस ही होगा भी। तुम मुक्ति मे जाने का सहज ऊपाय बताते हो। अपनेको आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप कहते है कि मै तो स्वर पावन हूं। मुझे कहते ही है पतित पावन। अब तुम देह-अभिमान छोडो। अपेन को आत्मा समझो और बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जावेगे। बस एक ही बात सुनाते है। बाप को याद करो तो पाप कटेगे और तुम मुक्तिधाम मे चले जावेगे। सभी को यही बताओं। कोई माने वां नां माने किसीकी बुधी मे थोडा भी आ गया तो मुक्तिधाम मे प्रजा मे आ जावेगा। नां बैठता है तो समझ जाना चाहिय कि यह तो हमारे धर्म का नही है। अक्षर ही दो है अलफ और बे। फिर भी पिछाडी मे बाप कहते है मनमनाभव। अपेन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। फिर जितना याद करेगें। अपना ही मीटर देखते रहो। मीटर वालो के पास भी तो मीटर रहता है नां। जिसेस ही माईल्स का पता पड़ता है। तुमको तो बहुत थोडा सा ही समझाना है। क्योकितुम्हारा तो समय बहुत कीमती है। बाप से वर्सा लेने लिय बार-2 बाप को ही याद करना है। औरो का कल्याण करना है। समय नष्ट नहीकरना है। सर्विस मे तो हडी-2 देनी है। दधीची रिशी का मिसाल है नां। मिस सम्बन्धी आद भी जो मिले उनको भी बोलो कि हम तो सिर्फ एक ही बात सुनाते है। हम सब भाई-2 है। एक बाप के बच्चे है। तुम्हारा तो धन्धा ही यह है। और कोई भी फालतु बाते नही करनी है। बाप की याद से ही पावन बनेगे। वो है शान्ति धाम और सुखधाम। यहां पर तो यह है ही दुःखधाम। अब फिर बाप कहते है कि मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेगे। और शान्तिधाम चले जावेगे। नब्ज भी देखनी है। उन लोगो को पता ही नही है कि विनाश होना है पहले ही मर जाते है। तो ही विनशविन्त हो जाते है तुम्हारी तो विजय ही होनी है। बाकी शान्तिधाम मे जावेगे। ओम